त्रिलोक सिंह ठकुरेला

जन्मतिथि– 1.10.1966
जन्मस्थान- नगला मिश्रिया, हाथरस (उ.प्र.)
पिता का नाम- श्री खमानी सिंह
माता का नाम- श्रीमती देवी
मोबाइल - 9460714267

कविता जीवन सत्व है, कविता है रसधार ।
अलंकार,रस,छंद में, भाव खड़े साकार ।।
भाव खड़े साकार, कल्पना जाग्रत होती ।
कर देते धनवान, शब्द के उत्तम मोती ।
'ठकुरेला' कविराय, हरे तम जैसे सविता ।
मेटें सब अज्ञान, ज्ञान-सागर सी कविता ।।

****

वन-उपवन फूलें-फलें, फलदायक हों बाग ।
सबके ही मन में रहे, वृक्षों हित अनुराग ।।
वृक्षों हित अनुराग, वृक्ष हैं जीवनदाता ।
करते बहु उपकार, वृक्ष हैं भाग्य-विधाता ।।
'ठकुरेला' कविराय,सुखों से भरते तन-मन।
सुरभित हों उद्यान,हरित हों सब वन- उपवन ।।

****

गौरैया का फुदकना,मन में भरे उमंग ।
बिखराती वह चहककर, सुख के अनगिन रंग ।।
सुख के अनगिन रंग, मोद से झोली भरती ।
जीवन के अवसाद, सहज पल भर में हरती ।
'ठकुरेला' कविराय, इसे आश्रय दो भैया ।
सुख से रहे सदैव, सुखद,मनहर गौरैया ।।

****

मन में यदि उल्लास हो, जग लगता सुख-धाम ।
सुखपूरित जीवन लगे, सहज, सरल सब काम ।
सहज, सरल सब काम, स्वप्न नव मन में जगते ।
लगता विश्व कुटुम्ब, अपरिचित अपने लगते ।
'ठकुरेला' कविराय, हर्ष छाता जीवन में ।
सदा रहे उल्लास, पल्लवित जन के मन में ।।

****

कठपुतली सी जिन्दगी, डोर प्रकृति के हाथ ।
जाने कैसी गति रहे, जाने किसका साथ ।।
जाने किसका साथ, थिरकना, हंसना,गाना ।
कभी गमों का दौर, अचानक सुख आ जाना ।
'ठकुरेला' कविराय, प्रेम से बांधे सुतली ।
हिलमिल सबके संग, बिताये दिन कठपुतली ।।

****

जीवन सबसे श्रेष्ठ है, उससे बढ़कर देश ।
जो अर्पित हो देश पर, जीवन वही विशेष ।।
जीवन वही विशेष, अमरता वह पा जाता ।
यह संसार सदैव, उसी का गौरव गाता ।
'ठकुरेला' कविराय,देशहित जिनका तन-मन ।
वंदनीय वे लोग , धन्य है उनका जीवन ।

****

पग पग पर कांटे बिछें, क्षण क्षण झंझावात ।
छाये गहरी वेदना, बनकर काली रात ।।
बनकर काली रात, घेर ले घोर निराशा ।
फिर भी रखो सदैव, चेष्ठा, साहस, आशा ।
'ठकुरेला' कविराय, भाग्य सोया जाता जग ।
रख खुद पर विश्वास, बढ़ो आगे ही पग पग ।।

****

सोना तपता आग में, और निखरता रूप।
कभी न रुकते साहसी, छाया हो या धूप।।
छाया हो या धूप, बहुत सी बाधा आयें।
कभी न बनें अधीर, नहीं मन में घबरायें।
'ठकुरेला' कविराय, दुखों से कभी न रोना।
निखरे सहकर कष्ट, आदमी हो या सोना।।

****

चलते चलते एक दिन, तट पर लगती नाव।
मिल जाता है सब उसे, हो जिसके मन चाव।।
हो जिसके मन चाव, कोशिशें सफल करातीं।
लगे रहो अविराम, सभी निधि दौड़ी आतीं।
'ठकुरेला' कविराय, आलसी निज कर मलते।
पा लेते गंतव्य, सुधीजन चलते चलते।।

****

रत्नाकर सबके लिये, होता एक समान ।
बुद्धिमान मोती चुने, सीप चुने नादान ।।
सीप चुने नादान, अज्ञ मूँगे पर मरता ।
जिसकी जैसी चाह, इकट्ठा वैसा करता ।
'ठकुरेला' कविराय, सभी खुश इच्छित पाकर ।
हैं मनुष्य के भेद, एक सा है रत्नाकर ।।

****